Sem III

Paper six

आधुनिककाल और साहित्य

(1)

Correct

* प्रयोगवाद के नामकरण के औचित्य पर प्रकाश डालते हुए उसकी प्रेरक परिस्थितियों एवं उपलब्धियों का उल्लेख कीजिए।

=> प्रयोगवाद आधुनिक हिन्दी कविता के क्षेत्र में सन् 1943 में 'तार सप्तक' के प्रकाशन के साथ आविर्भूत हुआ, जिसका विकास अपनी पूर्ववर्ती परम्परा की कोख से ही हुआ है। यह नई काव्य प्रवृत्ति प्रगतिशील कविताओं के साथ ही विकसित होती गयी। प्रयोगवाद - ज्ञात से अज्ञात की ओर बढ़ने की बौद्धिक जागरूकता है। यह जागरूकता 'व्यक्ति - सत्य' और 'व्यापक - सत्य' के स्तरों पर व्यक्ति की अनुभूति की सार्थकता को भी महत्वपूर्ण मानती है। प्रयोगवाद व्यक्ति - अनुभूति की व्यक्ति को मानते हुए समष्टि सम्पूर्ण की सम्पूर्णता तक पहुँचने का प्रयास है।

काव्य में प्रयोग तो सदैव से होते रहे हैं किन्तु 'प्रयोगवादी काव्य' का श्री गणेश उपर्युक्त संकलन के द्वारा ही माना जाता है क्योंकि इस संग्रह में

(2)

अबतक प्रचलित कविताओं की लीक से हटकर ऐसी कविताएँ थीं, जो नई संवेदनाओं, नये भाव बोध एवं नये शिल्प से युक्त था। तार सप्तक में अज्ञेय ने प्रयोग की व्याख्या प्रस्तुत करते हुए अपनी कविताओं के वक्तव्य में कहा है, प्रयोग सभी कालों के कवियों ने किये हैं, यद्यपि किसी एक काल में किसी विशेष दिशा में प्रयोग करने की प्रवृत्ति स्वाभाविक ही है, किन्तु कवि क्रमशः अनुभव करता आया है कि जिन क्षेत्रों में प्रयोग हुए हैं उनसे आगे बढ़कर अब उन क्षेत्रों का अन्वेषण करना चाहिए जिन्हें अभी नहीं छुआ गया है या जिनको अभेद्य मान लिया गया है। अज्ञेय जी ने दूसरा सप्तक की भूमिका में कवि-कर्म की व्याख्या करते हुए 'प्रयोग' शब्द को स्पष्ट किया था। उनकी दृष्टि में प्रयोग अपने आप में इष्ट नहीं है, वरन् वह साधक है, दोहरा साधन है। एक तो वह उस सत्य को जानने का साधन

है, जिसे कवि प्रेषित करता है और दूसरे वह उस प्रेषण क्रिया और उसके ~~साधक~~ साधनों को जानने का साधन है।

प्रयोगवादी कवि प्रयोग करने में विश्वास करते हैं। भाषा की दृष्टि से नये प्रयोग, उपमानों की दृष्टि से नये प्रयोग, शिल्प की दृष्टि से नये प्रयोग और काव्य वस्तु की दृष्टि से नये प्रयोग, शिल्प की दृष्टि से नये प्रयोग और काव्य वस्तु की दृष्टि से नये प्रयोग इन कवियों ने किये, अतः प्रयोगवाद नाम सार्थक जान पड़ता है, किन्तु अज्ञेय ने प्रयोग को साधन मानते हुए लिखा है- प्रयोगवाद अपने आप में इष्ट नहीं है, वरन् वह साधन है प्रयोगवादी कवियों ने अपने व्यक्तिगत सुख-दुःख को, अपनी वैयक्तिक संवेदनाओं को नये-नये माध्यमों से व्यक्त किया और उस यथार्थ को अभिव्यक्ति प्रदान की, जिसे वह भोगता है।

मध्यवर्ग आज ह्रासोन्मुख है, वह अपने चारों ओर के कठोर परिवेश के दबाव से टूट रहा है।

07 January 2020

sem 3rd
Paper six

(Q) * नई कविता के नामकरण के औचित्य पर प्रकाश डालते हुए उसकी प्रेरक परिस्थितियों एवं उपलब्धियों को उल्लेख कीजिए।

Ans → नयी कविता प्रयोगवाद का ही विकास विस्तार है। प्रयोगवाद का ही कालान्तर में नयी कविता के रूप में हुआ, जो भारतीय स्वतन्त्रता-प्राप्ति के पश्चात् लिखी गयी उन कविताओं के लिए अभिहित है जिनमे परम्परागत कविता से आगे नये मूल्यों, नये भाव-बोध और नये शिल्प-विधान का अन्वेषण किया गया है। स्वतंत्र्योत्तर जीवन के मोह-भंग और मनुष्य की स्थिति की अभिव्यक्ति नयी कविता में विशेष रूप से हुई है। ऐतिहासिक दृष्टि से नयी कविता सन 1951 ई० में प्रकाशित 'दूसरा सप्तक' के बाद की कविताओं को कहा जा सकता है। नयी कविता को दूसरा सप्तक के निकटवर्ती पाते हुए, किन्हीं अर्थों में कुछ भिन्नता का अनुभव भी किया। नयी कविता मूलतः 1953 में नये पत्ते के प्रकाशन के साथ विकसित हुई और जगदीश गुप्त तथा रामस्वरूप चतुर्वेदी के सम्पादन में प्रकाशित

रहता है। यह स्थिति प्रायः सभी प्रयोगवादी कवियों में दृष्टिगत होती है।

प्रयोगवादी कविता ह्रासोन्मुख मध्यवर्गीय समाज के जीवन का चित्र है। प्रयोगवादी कवि भावुकता के स्थान पर नई बौद्धिकता को स्वीकार करते हुए मध्यवर्गीय व्यक्ति - जीवन की समस्त जड़ता, कुंठा, अनास्था, पराजय और मानसिक संघर्ष के सत्य को बड़ी बौद्धिकता के साथ उद्घाटित करते हैं। दमित कामवासना के चित्र भी प्रयोगवादी काव्य में उपलब्ध होते हैं। लघुमानव को पूर्ण गरिमा के साथ प्रतिष्ठित करने का श्रेय भी प्रयोगवादी कवियों को ही जाता है।

हिन्दी में प्रयोगवाद का जन्म एक विशेष स्थिति में हुआ। नये भाव बोध को व्यक्त करने के लिए प्रयोगवादी कवियों ने प्रयोग की जरूरत समझी क्योंकि एक ओर अपने शब्दाडम्बर में बहुत से शब्दों और बिम्बों के गतिशील तत्वों को छायावाद ने नष्ट कर दिया। तो दूसरी ओर सामाजिकता के नाम पर विभिन्न भाव-स्तरों को एवं शब्द संस्कारों को प्रगतिवाद ने अभिधात्मक

(५) उसकी आकांक्षाएँ बंधनों और आर्थिक विराट हैं, सपने रंगीन हैं, संवेदनाएँ कोमल हैं, वह अपने चारों ओर खड़ी कठोर सामाजिक बंधनों और आर्थिक वैषम्य की अभेद्य दीवारों से टकराकर अपने में लौट आता है, और अपने को समाज से कटा हुआ, हारा हुआ, खंडित और कुंठित समझने लगता है तथा पीड़ा के अनेक स्तरों से उलझी हुई संवेदनाओं को मन का गहरा यथार्थ मान बैठता है। प्रयोगवादी कवि ने जिस नये सत्य के शोध और प्रेषण के नये माध्यम की खोज की घोषणा की थी, वह सत्य इसी मध्यवर्गीय समाज के व्यक्ति का सत्य था। मध्य वर्गीय व्यक्ति या कवि जनजीवन के सामूहिक जागरण से असम्पृक्त रहने के कारण अपनी सीमाओं को तोड़ने का कोई सक्रिय प्रयास करने की बजाय 'स्व' की गुफा में पीड़ा के मणि खोजता रहता है। जनजीवन के प्रवाह से कट कर उसी के बीच में नदी के द्वीप की भाँति अपनी इकाई में अव्यवस्थित

होने वाले संकलन 'नयी कविता' (1954 ई.) में सर्वप्रथम अपने समस्त सम्भावित प्रतिमानों के साथ प्रकाश में आयी।

'नयी कविता' नामकरण कई कारणों से किया गया। प्रथम तो यह नयी कविता के कवि विषयवस्तु और शिल्प की दृष्टि से अपने पूर्ववर्ती कवियों के साथ तो थे, किन्तु वे स्वयं यह अनुभव कर रहे थे कि 'दूसरा सप्तक' के कवियों द्वारा यहाँ और जिस सीमा तक समस्त काव्य चेतना पहुँच चुकी थी, नयी कविता उससे आगे भी और बढ़ चुकी है और किन्हीं अर्थों में वह 'दूसरा सप्तक' के कवियों की काव्य-चेतना से भी पृथक् भी है। नयी कविता का मूल स्रोत आज के युग-सत्य और युग-यथार्थ और काव्य की संवेदनशील अभिरुचि, दोनों एक साथ सर्वथा नयी भाव-भूमि पर अनुभूत को प्रस्तुत करती है। इस नयी भाव-भूमि का आग्रह उस मानवीय आत्मविश्वास और आत्म-अभिव्यक्ति से प्रभावित है, जिसे पिछले दो दशक केवल अपने अस्तित्व के संघर्ष में बिताने पड़े हैं और जो आज भी कई अर्थों में

काव्य की व्यापकता। वह कोई वाद नहीं है वह व्यापक जीवन-दृष्टि है। काव्य कहाँ नहीं है? प्रयोगवाद और प्रगतिवाद ने काव्य को बाँट दिया था, किन्तु नई कविता ने मानव को उसके समग्र परिवेश में सही रूप में अंकित करना चाहा है। नई कविता की दृष्टि मानवतावादी है किन्तु यह मानवतावाद मिथ्य आदर्शों की परिकल्पनाओं पर आधारित नहीं है बल्कि यथार्थ की तीखी चेतना अपने परिवेश से जुड़े मनुष्य के बौद्धिक प्रयासों और उसकी संवेदना के उलझे हुए नाना स्तरों तक अनुभूति और चिन्तन दोनों दिशाओं से पहुँचने की चेष्टाओं पर अवलंबित है। इसने छोटे-बड़े का भेद नहीं रखता छोटी बड़ी अनुभूतियों, सत्यों, क्षणों, स्थितियों घटनाओं और दृश्यों का बनावट अन्तर नहीं स्थापित किया।

हिन्दी की नयी कविता ने विभिन्न प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में सम्प्रदायों, तथा प्रतीकवाद बिम्बवाद अतियथार्थवाद अस्तित्ववाद आदि के अनेक प्रकार के प्रभाव प्रत्यक्ष या

(13)

अप्रत्यक्ष रूप में ग्रहण किये हैं। नये कवियों ने इन सम्प्रदायों का अध्ययन स्वयं किया अपितु उनके कुछ पथ प्रदर्शकों ने अंग्रेजी की कविताओं के माध्यम से ही से प्रभाव ~~प्रत्यक्ष~~ या जाने अनजाने में ग्रहण किये हैं। नये कवियों पर बाह्य प्रभाव भी देखा सकता है। अतियथार्थ कवियों ने अपने प्रयोगशील संग्रहों को आगे चलकर सुवर्ण नाम से दिया लगभग वैसे ही हिन्दी के प्रयोग वादियों ने आगे चलकर नयी कविता नाम स्वीकार कर लिया।

नयी कविता की प्रवृतियों में क्षणवाद अनास्था आस्था, मूल्यों का परीक्षण अहंवादाव्यक्ति अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता व्यंग्य, आधुनिकता और समसामयिकता का प्रतिनिधित्व, चित्रमयता और अनुशासित शिल्प आदि प्रमुख है। इस काव्यधारा के कवियों अज्ञेय, मुक्तिबोध कुवरनारायण, सर्वेश्वरदयाल सक्सेना, मदन वात्स्यायन गिरिजाकुमार माथुर, नेमिचंद्र जैन धर्मवीर भारती लक्ष्मीकांत वर्मा, शिवानी प्रसाद मिश्र आदि के नाम उल्लेखनीय है।

(१०)

उन्हें नए-नए माध्यमों द्वारा व्यक्त
कर चर्चा करते समय मूलतः इन्हीं
कवियों को ध्यान में रखा है। यह
ठीक भी है क्योंकि समाजवादी
विश्वासों वाले कवि प्रगतिशील कविता-
क्षेत्र में आ जाते हैं।

कवि के रूप में उन्होंने
'तार-सप्तक' और 'तीसरा-सप्तक' जैसे
दिशा प्रवर्तक संकलनों का प्रकाशन
किया। भग्नदूत, चिन्ता, इत्यलम्, हरी
घास पर क्षण भर, बावरा अहेरी, इन्द्र
इन्द्रधनुष रौंदे हुए थे, अरी ओ
करुणा प्रभामय, आँगन के पार द्वार
तथा सुनहले शैवाल उनकी प्रकाशित
काव्य-यात्रा आरंभ कर अनेक मोड़ों
से होती हुई उनकी कविता 'आँगन
के पार-द्वार' की नव रहस्यवादी
कविताओं तक पहुँचती है। 1943 ई.
में प्रकाशित 'तार-सप्तक' के साथ
वे प्रयोगवाद के प्रवर्तक कवि के
रूप में प्रसिद्ध हुए। इस काव्य-संकलन
में उन्होंने नूतन भाव-बोध को व्यक्त
करने के लिए नूतन शब्द और रूप
के अन्वेषण पर बल दिया है।

अज्ञेय ने जो काव्य-रचा
आरंभ की उस समय एक ओर
सौन्दर्य-बोध
छायावाद के कोमल और

में होते आये हैं, किन्तु 'प्रयोगवाद' नाम उन कविताओं के लिए रूढ़ हो गया है जो कुछ नए बोधों, संवेदनाओं तथा उन्हें प्रेषित करने वाले शिल्पगत चमत्कारों को लेकर शुरू-शुरू में 'तार सप्तक' के माध्यम से सन् 1943 ई. में प्रकाशन जगत में आयी और जो प्रगतिशील कविताओं के साथ विकसित होती गयी तथा जिनका पर्यवसान नई कविता में हो गया है। प्रयोगवाद नाम 'भ्रामक' है क्योंकि इस नाम से यह दिखाई देता है कि इन कवियों ने प्रयोग को साध्य मानकर एक नया वाद चला दिया। अज्ञेय जी ने दूसरा सप्तक की भूमिका में कवि धर्म-कर्म की व्याख्या करते हुए 'प्रयोग' शब्द को स्पष्ट किया था। उनकी दृष्टि में प्रयोग अपने आप में इष्ट नहीं है, वरन साधन है। दोहरा साधन है। एक तो वह उस सत्य को जानने का साधन है जिसे कवि प्रेषित करता है, दूसरा यह है कि उस प्रेषण क्रिया और साधनों को जानने का साधन है।

Sem III 09 January 2020

(13) सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय'

Paper six

* कवि 'अज्ञेय' का संक्षिप्त जीवन वृत प्रस्तुत करते हुए उनके काव्यगत वैशिष्ट्य पर प्रकाश डालें।

उ॰> कवि अज्ञेय का जन्म सन् 1911 ई॰ में देवरिया जिले के कसिया ग्राम में हुआ था। इन्होंने बी.एस.सी की शिक्षा प्राप्त करने के बाद उन्होंने अंग्रेजी, हिन्दी साहित्य स्वा एवं संस्कृत का अध्ययन किया। इनका जीवन बेहद कठिन क्रान्तिकारि एवं संघर्ष में जीवन व्यतीत हुआ 1943 से 1946 तक उन्होंने नौ सेना ~~आर्मी~~ में नौकरी किए। कुछ दिन जोधपुर विश्वविद्यालय में कार्यरत रहे। ये कवि के साथ-साथ मशहूर कथाकार, समीक्षक और चिंतक, विचारक भी हैं। पत्रकारिता के क्षेत्र में ख्याति प्राप्त कर उन्होंने तार सप्तक, दूसरा सप्तक, तीसरा सप्तक, और रूपाम्बरा के रचनाकार के रूप में भी ख्याति प्राप्त की। छायावादी कविताओं में प्रसिद्ध नई कविता के विशिष्ट कवि हैं। उस समय के कवियों से सबसे विभिन्न ~~स्वर~~ स्वर ~~हैं~~। अज्ञेय जी का

(26)

से पूर्ण कविता थी, दूसरी ओर सामाजिक यथार्थ से प्रेरित सौन्दर्य-बोध से हीन रचनाएँ और तीसरी और व्यक्तिनिष्ठ प्रेम की आवेगमयी धारा। अज्ञेय ने इन सभी के बीच मध्यवर्ग के संघर्षरत मनुष्य की अनुभूतियों की अभिव्यक्ति का मार्ग चुना। उन्होंने बल दिया में प्रयोग करने की आवश्यकता पर बल दिया।

अज्ञेय की कविता एक व्यक्तिनिष्ठ कवि की कविता है किन्तु उनकी अनुभूतियों का क्षेत्र अत्यन्त व्यापक है। वह व्यक्ति से समाज तक, प्रेम से लेकर दर्शन और विज्ञान तक, यंत्र-सभ्यता से लेकर लोक-परिवेश तक, प्रकृति-प्रेम से लेकर मानव-सौन्दर्य तक, यातना बोध से लेकर विद्रोह की ललकार तक विस्तृत है।

हिन्दी के प्रयोगधर्मी कविता में अज्ञेय एक यायावर कवि के रूप में प्रतिष्ठित है। उनके काव्य में व्यक्तिवादिता का स्वर गहराई तक गूंजा है। उनके काव्य में प्रणय वेदना एवं दुःखवाद की तीव्रता अभिव्यक्त हुई है। उनकी

मानते हैं और उसके सद्भाव में समान के प्रति कवि के उत्तरदायित्व को स्वीकार करते हैं। नयी कविता की सर्वप्रमुख विशेषता जीवन के प्रति उसकी आस्था में दृष्टिगत होती है, अज्ञेय की 'मैं वहाँ हूँ' आंशिक कविता इसका उदाहरण है।

'मैं वहाँ हूँ' कवि अज्ञेय की एक प्रसिद्ध कविता है जो नयी कविता के अन्तर्गत परिगणित होती है। इस कविता में अनुभूति की सच्चाई और बुद्धिमूलक यथार्थवादी दृष्टि दोनों की विद्यमानता दृष्टिगत होती है।

कवि कहता है - दूर-दूर-दूर मैं वहाँ हूँ यह नहीं कि मैं भागता हूँ। मैं सेतु बनकर वर्तमान और भविष्य दोनों को मिलाता हूँ और मैं यहाँ हूँ किन्तु मैं सेतु हूँ क्योंकि दूर-दूर दूर मैं वहाँ हूँ।

जो मिट्टी गोड़ता कोई खाता है और जो उन्हें खिलाता है कवि स्वयं को उस श्रम साधक की साधना मानता है। वह जो मिट्टी कोड़ता है, मड़िया ग्राम काल के घर में रहता है और महलों को बनाता है, कवि स्वयं को उस राज मिस्त्री की आस्था मानता है।

वर्तमान और भविष्य का सेतु मानता है पर वह यह भी कहता है कि ऐसा नहीं है कि जो है वह उसे स्वीकार्य है क्योंकि वह उसका की आस्था अनवरत अपने की शक्ति, व्यथा, मुक्ति का उल्लास, आशा, मानव का अलिखित इतिहास, साधना, प्रयास में कभी शिथिल न होने का निश्चय मानने के साथ वह संघर्ष है, जिसे विश्राम नहीं है, जो है उसे वह बदलता है, जो होगा यानि भविष्य वो उसे ही तो लाना है। अपनी कविता कर्म से उसकी पहचान वैसी ही है जैसी पहचान उसे अपनी साँस से है, किन्तु घृणा से उसे कुछ लेना-देना नहीं है क्योंकि डर को उसने जाना ही नहीं। वह अभय है भक्ति जय है।

कवि वह वर्तमान और भविष्य के मध्य का सेतु अवश्य है पर शून्य से शून्य तक का सतरंगी सेतु नहीं है। वह ऐसा सेतु है, जो मानव से मानव का हाथ मिलने से बनता है, जो हृदय से हृदय को, मन का शिखा से मन की शिखा को, कल्पना के पंख से कल्पना के पंख को, विवेक की किरण से विवेक की

* कवि सर्वेश्वरदयाल सक्सेना का जीवन - वृत का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

उ०⇒ नये कवियों की परम्परा में सर्वेश्वरदयाल सक्सेना का स्थान विशिष्ट है। इनका जन्म 15 सितम्बर 1927 ई. में हुआ जिस विराट परिप्रेक्ष्य में उन्होंने वर्तमान जीवन के यथार्थ का चित्रण किया है वह अन्यत्र दुलभ है। जिन्दगी के अकेलेपन, अजनबीपन, संत्रास, राजनीतिक पाखंड, भ्रष्ट अवस्था, जीवन की विसंगतियों का चित्रण प्रस्तुत किया गया है। यहाँ एक विराट फलक पर कवि इन विसंगति के बीच बुद्धिजीवी वर्ग निष्क्रियता पर चिन्तित है वह इस वर्ग को संघर्ष के लिए आह्वान करते हैं। वे जानते हैं कि सत्य की चोट बहुत गहरी होती है। इसी से कवि ने कहा है— वे कवि - कर्म की सार्थकता इसमें मानते हैं कि दुर्बलता दर्द में बदल जाय, यथा अन्तर्दृष्टि दे और खण्डित आत्माएं शक्ति को सम्भावनाएँ कर सकें।

ग्राम्य - संस्कृति के प्रति विशेष आकर्षण सर्वेश्वर के काव्य की एक प्रमुख विशेषता है। शहरीकरण

की प्रकृति से ग्रामीण जीवन के सहज उल्लास को नष्ट होते देखकर वे चिन्तित हैं। 'कुआनो नदी' शीर्षक कविता में कवि ने ग्राम्य और महानगर के द्वंद्व को उभारने का प्रयत्न किया है। 'कुआनो नदी एक कच्ची सड़क थी' शीर्षक कविता में नष्ट होती हुई ग्रामीण संस्कृति की व्यथा की सशक्त अभिव्यक्ति हुई है। लोक-कथा जीवन से सम्बद्ध अनेक चित्र उनकी रचनाओं में वर्तमान है। 'सुहागिन का गीत', 'गाँव की शाम का सफर', 'कुआनो नदी', 'मुजैनिया का पोखरा' उल्लेखनीय है। बहुत सी कविताएँ ग्रामीण गीतों की तर्ज पर लिखी गई है। 'सावन का गीत', 'चुपाई मारो दुलहिनत', 'गरीब का गीत' आदि रचनाएँ इसी प्रकार की है। अभिव्यक्ति के क्षेत्र में सपाट बयानी उनकी कविता की प्रमुख विशेषता है। वे कविता में सब कुछ समझा कर कहने की कोशिश करते हैं। परिणामस्वरूप उनकी रचनाएँ सपाट कथन वक्तव्य बन जाती है। किन्तु नूतन बिम्बों और प्रतीकों की योजनों इनकी कविता को सपाट कथन से बचा लेती है। नयी कविता में

(07)

किरण को अनुभव के स्तम्भ से अनुभव के स्तम्भ को मिलाता है, जो मानव को एक करता है, समूह का अनुभव जिसकी मेहराबें हैं और जन-जीवन की अजस्र प्रवाहमयी नदी जिसके नीचे से बहती है मुड़ती बलखाती नये मार्ग फोड़ती, नये कगारें तोड़ती फिर परिवर्तनशीलता सागर की ओर जाती है, कवि स्वयं को वहीं पाता है।

निसन्देह प्रस्तुत कविता में आस्था के गहन स्वर मुखरित हुए हैं। कवि के द्वारा अपनाये गये बौद्धिक प्रतीक यहाँ जीवन की जटिलता के चित्रण में पूर्णत: सहायक है।

वह जो कोयला की खानों में उतरकर श्रम करता है पर चमचम विमानों को आकाश में उड़ाता है, वह जो नंगे बदन रह दम साधकर पानी में डूबता है और बाजार के लिए पानीदार यानी चमकते मोती निकाल लाता है, वह जो कलम घिसता है, चाकरी करता है पर सरकार को चलाता है, कवि स्वयं को उसकी व्यथा मानता है, वह जो कचरा ढोता है झल्ली लिये फिरता है और बेघर घूरे पर सोता है वह जो टट्टू हाँकता है, तन्दूर झोंकता है, वह जो कीचड़ उलीचती है, सबकी शोभावृद्धि के लिए चमकीले श्रृंगार प्रसाधन सजाती है, वह जो कन्धे पर चूड़ियों की पोटली लिये गली-गली झाँकती है, वह जो दूसरों का उतारन फींचती है वह जो रेढ़ी ढकेलता है, चौका लीपता है, बासन माँजता है ईंटें उछालता है, रुई धुनता है, गारा सानता है, खटिया बुनता है मशक से सड़क सींचता है, रिक्शा में अपना प्रतिरूप लादे खींचता है, वह जो भी जहाँ शिल्पी और सृष्टा है, कवि स्वयं को उसकी कथा मानता है।

आगे कवि पुनः स्वयं को जो है और जो होगा यानि

जिस दुर्बोध जटिलता की बात की जाती है वह इनकी कविताओं में नहीं मिलती। इनकी कविता में ऐसी सहजता और आत्मीयता है जो दूसरे कवियों में दुर्लभ है।

"लोकतंत्र एवं जूते की तरह
लाठी में लटकाये भागे जा रहे सभी
सीना फुलाये।"

"मुकुट धारण किये घूम रहे हैं विज्ञापन
आज शासक
औ चौड़ाओं की पोशाक है।
बाजे वाले ने पहन रखी है।"

सर्वेश्वर नयी कविता के परवर्ती दौर के कवि हैं तो वर्तमान युग की विसंगतियों का चित्रण करके संतुष्ट नहीं रह जाता, नव-निर्माण के लिए शक्ति-संचय का भी आह्वान करता है। यथार्थ का चित्रण करके वह सच्ची चोटें करता है क्योंकि वह इसकी शक्ति से परिचित है।

प्रस्तुत कविता लोहिया के विचारों से प्रभावित कविता है। इनकी मृत्यु 24 दिसम्बर 1984 ई. में हुआ।

sem III

Paper six

(23)

मैं वहाँ हूँ

* अज्ञेय रचित 'मैं वहाँ हूँ' शीर्षक कविता की समीक्षा कीजिए।

उ => अज्ञेय प्रयोगवाद और नयी कविता के विशिष्ट कवि के रूप में मान्य है। उनकी काव्य-यात्रा 'तार-सप्तक' की कविताओं के साथ प्रारम्भ होती है। उनकी कविताओं में एक ओर व्यापक मानवीयता, स्वाधीनता और सृजनशीलता के प्रति अटूट विश्वास है तो दूसरी ओर स्वर-वैविध्य उनकी बौद्धिकता के कारण दृष्टिगत होती है। संवेदना उनकी कविताओं में एक सजग बौद्धिकता के साथ व्यक्त होती है और उससे नियंत्रित भी होती है। अज्ञेय का आत्मसजग कवि एक परिधि में ही केन्द्रित नहीं रहकर अपनी परवर्तित परिस्थितियों की चुनौती असंख्य बुनियादी समस्याओं, परिवेश की विसंगतियों, आर्थिक-सामाजिकता विषमता, भय, तनाव, अनिश्चय, नागरीय जीवन की विरूपता, असहनीय जीवन-कष्टों से युक्त युगबोध आदि के साथ अपनी मन स्थिति को उभारने में सफल रहा है। सभी श्रेष्ठ कवियों की भाँति अज्ञेय जी कला का उद्देश्य सौन्दर्य बोध

निष्कर्षतः— यह कहा जा सकता है कि नयी कविता हिन्दी काव्य का सबसे नवीन उन्मेष है और एक जीवित विकास के रूप में आज भी प्रभाव प्रवाहमान है। नयी कविता जहाँ जीवन के प्रति गहन आस्था रखती है वहाँ बिम्बात्मकता, नयी कविता प्रतीक योजना, नये विशेषणों व उपमानों के प्रयोग से उसका शिल्प एक नई छटा से युक्त हो गया है। कवियों ने बिम्बों का चयन आसपास जीवन से किया है वो शब्द चयन में मिट्टी की गंध समायी हुई है।

'तार-सप्तक' की कविताओं के साथ अज्ञेय की नई काव्य-यात्रा प्रारंभ होती है जो बाद में इत्यलम् में संगृहीत दिखाई पड़ती है। अज्ञेय में संवेदना के साथ एक सजग बौद्धिकता है। उनकी संवेदना तो नियंत्रित करती है साथ ही कभी नवीन सूक्तियों के रूप में या अच्छा सत्य सुधार नीरन्ध्र भाषा ले आदि कविताओं में कभी व्यंग्य के रूप में कभी युग-चिंतन और बोध के बिम्ब विधान के रूप में व्यक्त होती है, जो संवेदना और अनुभूति से अंतरंग-भाव से जुड़ी न होने के कारण बिम्ब-रचना के बावजूद बहुत दूर तक प्रभावहीन हो जाती है। 'अज्ञेय' की छोटी-छोटी कविताएँ सौन्दर्य और प्रभाव की दृष्टि से विशिष्ट और सक्षम हैं।

प्रयोगवादी कवियों में अज्ञेय का स्थान तक प्रतिनिधि कवि के रूप में जाना जाता है उनकी रचनाओं में नवीन कल्पना और नये प्रतीक का समावेश अधिक देखा जाता है।

प्रयोग तो प्रत्येक युग

मान्यता है कि वेदना में वही शक्ति होती है इससे व्यक्तित्व में निखार आता है।

कवि की मान्यता है कि दुःख सबको माँजता है उन्हें यह सीख अवश्य देता है कि सबको मुक्त रखे। एक स्थान पर कवि ने कहा भी है कि "दुख भोगना रचना करना नहीं है। यद्यपि रचना करने के लिए दुःख भोगना आवश्यक है। दुख से जो उन्मेष होता है वही रचनाशील होता है।

निःसन्देह, अज्ञेय की काव्यानुभूति, सौन्दर्यानुभूति एवं कलात्मकता से आपूरित है। प्रकृति और नारी के चित्रण में पूरी सूक्ष्मता के साथ कवि का सौन्दर्य-बोध उभरा है। प्रकृति-चित्रण के माध्यम से कवि की भोगातुरता की अभिव्यंजना हुई है। प्रकृति के ऐसे चित्र और भी कई स्थलों पर देखे जा सकते हैं। समग्रतः उनका सौन्दर्य कथन नवीन एवं ताजा है।

रागात्मकता के ~~साथ~~ स्थान पर बौद्धिकता, प्रयोगवादी और नयी कविता की विशेष प्रवृत्ति है। यह प्रवृत्ति अज्ञेय की कविता को

वह अपने व्यक्तित्व को भी सुरक्षित रखना चाहता है। वह विशाल मानव-प्रवाह में बहने के साथ-साथ अस्तित्व के यथार्थ को भी स्थापित करना चाहता है, उसके दायित्व का निर्वाह भी करना चाहता है।

स्वतंत्रता की प्राप्ति के बाद प्रगतिवाद की समाप्ति की घोषणाएं होने लगी थी और प्रयोगवाद की कुण्ठा, अहं और दमित काम-वासना से भी लोग ऊब उठे थे। अतएव जो अतिरोध जनता में दिख रहा था, वही कविता के क्षेत्र में भी प्रदर्शित हो रहा था। इन्हीं परिस्थितियों में नई कविता का उदय हुआ। दिशा-भ्रमित कवि को नई दिशाएँ मिलीं। उसने अनुभव किया कि काम के तो मानव-जीवन सर्वांग में विद्यमान है। केवल शोषित वर्ग में या वैयक्तिक कुण्ठा, निराशा काम-वासना में कथ्य को खोजना कहाँ की बुद्धिमता है। कथ्य को खोजने के लिए सर्वत्र अपनी दृष्टि दौड़नी चाहिए।

डॉ. रामदरश मिश्र के शब्दों में इस प्रकार का नई कविता की सबसे बड़ी विशेषता है

(1b)

उस अस्तित्व की वेदना - संवेदना से ओत - प्रोत है।

ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में देखें तो प्राय: सभी नये वाद या नयी - नयी धाराएँ अपने पूर्ववर्ती वादों या धाराओं की तुलना में कुछ नवीन अन्वेषण की आस लिये दिखायी पड़ती है। साहित्य की यह नवीनता सदैव श्लाघ्य है, यदि वह अपना सम्बन्ध बदलते हुए सामाजिक जीवन के मूल सत्यों में बनाए रखें। इस प्रकार नितनूतनता और ~~परम्प~~ परम्परा गतिमान रही है। फिर भी 'नयी कविता' नाम स्वतंत्रता के बाद लिखी गयी उन कविताओं के लिए रूढ़ हो गया, जो अपनी वस्तु - छवि और रूप छवि दोनों में पूर्ववर्ती प्रगतिवाद और प्रयोगवाद का विकास होकर भी विशिष्ट है। अतः इस नवीन काव्यधारा का किया गया नामकरण 'नयी कविता' सर्वथा उपयुक्त एवं सार्थक है।

नयी कविता आज की मानव विशिष्टता से उद्भूत उस लघु मानव के लघु परिवेश की अभिव्यक्ति है, जो एक ओर आज की समस्त तिक्तता और तिक्तताओं के बीच

तिलपन

बाद में नई कविता के प्रमुख हस्ताक्षर बन गये। अज्ञेय, मुक्तिबोध, गिरिजा कुमार माथुर आदि के नामों के अतिरिक्त शमशेर बहादुर सिंह, नरेश मेहता, रघुवीर सहाय आदि के नाम इस क्षेत्र में उल्लेखनीय हैं।

घोर वैयक्तिकता, बौद्धिकता का अतिरेक, निराशा और कुंठा का अंकन, भद्देपन का चित्रण, नये-नये उपमानों का प्रयोग आदि प्रयोगवाद की प्रमुख प्रवृतियाँ हैं।

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि प्रयोगवादी कवियों ने व्यक्ति के अन्तरसम्बन्धों, क्षणों की अनुभूतियों और सूक्ष्म से सूक्ष्म, छोटी-से छोटी संवेदनाओं और मन की विभिन्न स्थितियों को लेकर छोटी-छोटी तीव्र प्रभावशाली कविताएँ लिखीं, फलीभूत किये। साथ ही जब मानव को उसकी समस्त छोटी-छोटी तीव्र प्रभावशाली कविताएं लिखीं, कुंठा, हीनता और महत्ता के संदर्भ में प्रस्तुत करके प्रयोगवादी कविता ने उसके प्रति सहानुभूतिमय शब्द से सोचने के लिए एक नया रास्ता खोला।

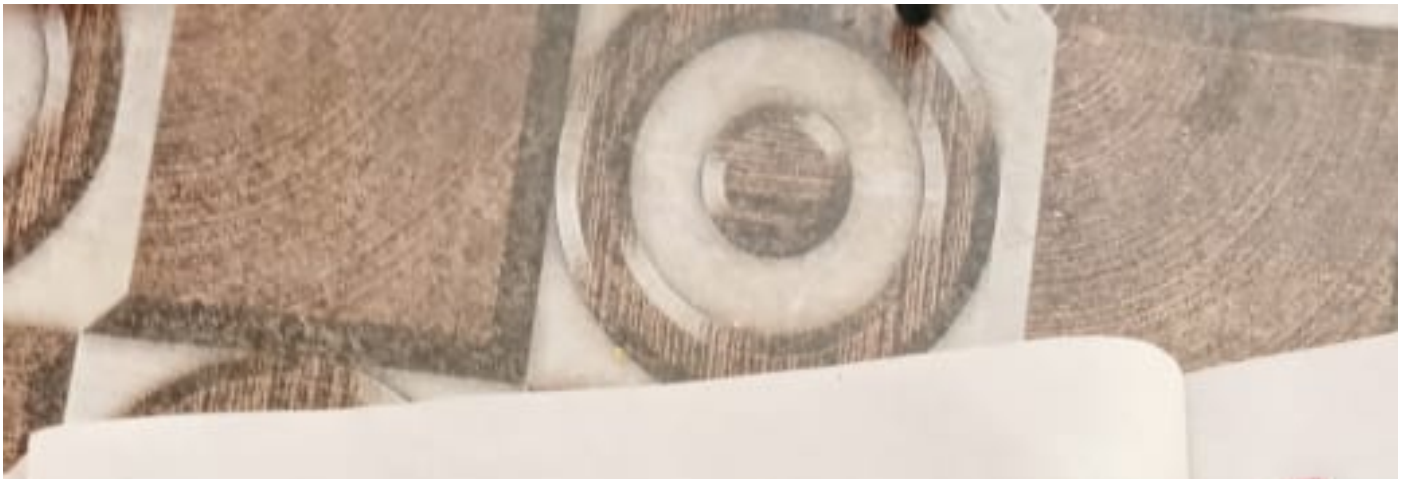

'तार-सप्तक' और 'प्रतीक' पत्रिका को देखने से यह स्पष्ट ज्ञात होता है कि इनमें संग्रहित या प्रकाशित कवियों के अनुभव के क्षेत्र, दृष्टिकोण और काव्य एक ही प्रकार के नहीं हैं। कुछ ऐसे हैं और जो विचारों से समाजवादी जैसे शमशेर संस्कारों से व्यक्तिवादी और बहादुर सिंह, नरेश मेहता और नेमिचंद्र जैन। कुछ कवि ऐसे हैं जो विचारों और क्रियाओं दोनों से समाजवादी हैं। कुछ कवि ऐसे हैं जो प्रगतिशील कविता के द्वारा व्यक्त होते हुए भी जीवन-मूल्यों और सामाजिक प्रश्नों को असत्य या सत्य मानकर अपने व्यक्तिगत जीवन में तड़पने वाली उन संवेदनाओं को भी स्थापित करना चाहते हैं। प्रायः ये सभी कवि मध्य-वर्ग के हैं। जिन कवियों ने समाजवादी विश्वासों को अपने संस्कार में ढालकर कविताए लिखी हैं, वे वास्तव में जनवादी कवि हैं किंतु जो ऐसा न कर सके हैं या करना चाहते हैं वे अपने अंकित व्यक्तिगत सुख-दुःख की संवेदनाओं को ही अपने काव्य में सत्य मानकर

(22)

विशेष रूप से प्रभावित करती है। इसी का सहारा लेकर वे प्रतीक वस्तु को परंपरागत रूढ़ि से हटकर नूतन दृष्टि से देखते हैं और वस्तुओं का विवेचन करते हैं। इसी के कारण इनकी रचनाओं में विचार और भावात्मकता यहां तक संतुलित स्थिति में उपस्थित हुए हैं यद्यपि इनकी परवर्ती रचनाओं में बौद्धिकता और वैचारिकता प्रधान हो जाती है। 'आंगन के पार द्वार' की रहस्यवादी रचनाओं में इसके उदाहरण देखे जा सकते हैं। सन् 1987 ई. में इस चिन्तन के काव्य के नूतन मार्ग के अन्वेषी कवि की जीवन-लीला समाप्त हो जाती।

बना दिया था जिसे भाव बोध को व्यक्त करने के लिए न तो शब्द में सामर्थ्य था और न परम्परा से मिली हुई शैली में यही कारण है कि नये भावबोध को व्यक्त करने के लिए सर्वथा नया स्तर और नये माध्यमों का प्रयोग आवश्यक समझा गया। प्रयोगवाद यह मानता है कि किसी भी अनुभूति की बौद्धिक पृष्ठभूमि होती है और वह पृष्ठभूमि भी भी रागात्मक है। किसी भाव का बोध एक बौद्धिक प्रक्रिया है। हृदयवादी इस बौद्धिकता का बहिष्कार करके उसे सर्वथा ग्राह्य बनाने की चेष्टा करते हैं जो प्रयोगवाद को स्वीकार्य नहीं है। प्रयोगवाद विषय वस्तु और शिल्प दोनों को अविभाज्य अंग मानता है। स्पष्ट है कि किसी भी नये विषय को पुराने शिल्प के माध्यम से नहीं व्यक्त किया जा सकता।

प्रयोगवाद का विकास ही कालान्तर में 'नई कविता' के रूप में हुआ। दोनों में कोई सीमा रेखा नहीं खींची जा सकती। बहुत से कवि जो पहले प्रयोगवादी रहे